आधुनिक भारतीय चित्रकला में महिला चित्रकारों द्वारा नारी–अंकन

विनीता देवी
शोध छात्रा, चित्रकला विभाग
दृश्य कला संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो०न०– 8924972145
vinitaverma977@gmail.com
प्रो० सरोज रानी
चित्रकला विभाग, महिला महाविद्यालय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
मो०न०–9415448747
profsaroj89@gmail.com

सारांश

विश्व के धरातल पर समय–समय पर अनेक सभ्यताओं के उद्भव एवं विकास में महिला शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आदिम काल से लेकर अब तक नारियों ने अपनी कलाकृतियों के द्वारा अपनी सृजनात्मकता का परिचय देने का कार्य किया है। नारी इस सृष्टिजगत की आधारशिला हैं। ईश्वर ने नारी को सृजन शक्ति का वरदान देकर समाज के लिए उन्हें उतना ही आवश्यक बनाया है जितना सृष्टि के लिए वह स्वयं है। तभी तो भारतीय मनीषियों और कला विद्वानों ने नारी को संसार की उत्पत्ति का आधार तत्व माना है।

भारत वर्ष में प्रारम्भ से ही नारी की कला में दक्षता की दीर्घकालीन परम्परा रही है, जैसे कि "प्रागैतिहासिक कालीन भित्तियों पर अंकित हाथों की छाप तथा उत्तर वैदिककाल की राजकुमारी ऊषा को उसकी कल्पना के राजकुमार के चित्र को उकेरकर दिखाने वाली चित्रलेखा, रामायणकाल की चित्रकार उर्मिला तथा बौद्ध व जैन काल की चित्रकार अनुपमा और रंगलदेवी"[1] तथा वर्तमान में अनेक भारतीय महिला चित्रकारों ने अन्तःकरण की सहज अभिव्यक्ति से आधुनिक भारतीय चित्रकला को पुष्ट किया है।

शब्द–बीज : युवती, तरुणी, वनिता, कामिनी, त्रिया, स्त्री, कांता, इत्यादि।

आधुनिक भारतीय कला में महिलाओं की भागीदारी अधिक प्रभावशाली रूप से रही है। जिनमें मुख्य रूप से बंगाल शैली की प्रसिद्ध महिला चित्रकार सुनयना देवी के साथ प्रतिभा टैगोर, सविता टैगोर तथा बीसवीं शताब्दी की सुप्रसिद्ध महिला चित्रकार अमृता शेरगिल थी। अमृता शेरगिल भारत की पहली महिला चित्रकार हैं जिन्होंने अपने चित्रों के माध्यम से समाज में नारी के जीवन के विभिन्न रंगों को, विषाद, उदासी, करुणा में डूबी महिलाओं के रूप में अपनी तूलिका के द्वारा कैनवास पर प्रमुखता से अंकन प्रकट किया है। जैसे– **'चारपाई पर महिला' (चित्र सं0–01)**–इस चित्र में अमृता ने दो महिलाओं को चित्रित किया है, जिसमें एक बीमार नारी चारपाई पर लेटी है, उसकी देखभाल करती दूसरी नारी उनके बगल में बैठ कर पंखा कर रही हैं इनकी कुछ अन्य प्रमुख कृतियाँ है– 'हल्दी पीसती हुई महिलायें, 'मदर इंडिया', 'पहाडी महिलायें', 'तीन बहिनें', 'विश्राम करती

स्त्री', 'बालिका वधु', 'अछूत बालिका', 'नववधु का श्रृंगार' 'कहानी कहती हुई औरतें', इत्यादि। जिनमें दुबली–पतली साँवले रंग की गरीब महिलायें उनकी प्रमुख विषय के रूप में दिखाई देती हैं। ''विवान सुन्दरंम ने लिखा है कि अमृता शेरगिल की कृतियों में उदास स्त्रियां, निर्वसना व जंगल में खोई हुई स्त्रियां ही दिखाई देती हैं। उनके बाद के कामों में खास तौर पर स्त्रियों के चेहरे, दमित भावनाओं की वजह से बहुत तनावग्रस्त दिखाई देते हैं''[2]।

वर्तमान में समकालीन महिला कलाकारों की बात करें तो वे भी देश विदेश में अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं। इन महिला कलाकारों ने चित्रकला के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिनमें अर्पिता सिंह, अंजलि इला मेनन, गोगी सरोज पाल, अर्पणा कौर, बी प्रभा, माधवी पारेख कुछ ऐसी महिला कलाकार हैं, जिन्होंने न केवल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की बल्कि संपूर्ण विश्व में नारी जाति को सम्मान दिलाया।

भारतीय समकालीन कला के क्षेत्र में अर्पिता सिंह एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में स्थापित हैं। उन्होंने अपनी कला कृतियों के द्वारा महिलाओं और बच्चियों की स्थिति को समाज में एक दृष्टि प्रदान किया है। उनके इस दृष्टिकोण से नई पीढ़ी के कलाकारों ने भी अपनी दृष्टि से नारी समस्या को समझा और इसको समाज के सामने खुलकर प्रकट किया। अर्पिता की दृष्टि मुख्यतः महिलाओं पर ही केन्द्रित रही है। अधिकतर कला कृतियों में उन्होंने महिलाओं के सादे जीवन तथा उनकी दिनचर्या को दर्शाया है। "एक स्त्री होने के दुःख–दर्द की समस्या को अर्पिता की सहानुभूति ने एक अलग और विशेष रचनात्मक नजरिये से देखा। वह मात्र करूणा का बचाव नहीं करना चाहतीं बल्कि किसी दर्शक के मन को उसके होशो–हवास रहने तक बेचौन करने के जिद में लगी हुई हैं"[3]। इनकी कृतियों में हम समाज में स्त्रियों की दशा को देख और समझ सकते हैं।

अर्पिता सिंह के चित्रों में समाज में बढ़ती स्त्री समस्या पर आलोचनात्मक टिप्पणी नजर आती है। ज्यादातर कला आलोचकों का कहना है कि अर्पिता ने अपने चित्रों में स्त्री को अपना मुख्य विषय बनाया है, और यह कह दिया जाता है कि ज्यादातर उनके चित्रों में समाज और घरेलू महिलाओं की समस्यायें हीं दिखती हैं। समाज में एक महिला कलाकार के लिये कला के क्षेत्र में जगह बनाना आसान नहीं है। उन्हें कई तरह की विरोधी परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़ता है जिसे एक महिला अधिक समझ सकती है। अर्पिता ने महिलाओं के भावों और संवेदनाओं को अपने चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। **'पिस्तौल वाली दुर्गा' (चित्र सं0–02)**–इस चित्र में एक विधवा स्त्री को दर्शाया गया है। समाज में रीति–रिवाजों से जकड़ी एक विधवा स्त्री को अनेक समस्याओं के साथ उत्पीडन का शिकार होना पड़ता है। चित्र में एक विधवा स्त्री सफेद साड़ी पहन कर एक पुरुष के ऊपर खड़ी है। उसके एक हाथ में पिस्तौल है जिससे वह पुरुष पर निशाना साधे है। पुरुष पिस्तौल देख के घबराकर नीचे गिरते हुए प्रदर्शित हैं। अर्पिता ने इस चित्र के माध्यम से एक शोषित महिला के प्रतिशोध को बहुत ही मार्मिक ढंग से उजागर किया है।

यदि हम बात करें अंजलि इला मेनन की नारी आकृतियों की, तो उनके चित्रों को देखकर यह महसूस होता है कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और नारी जीवन के गहरे प्रभावों को कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्होंने नारी जीवन के रोजमर्रा कार्यो को बहुत ही सहजता, सौम्यता और सुन्दरता के साथ चित्रण किया है। 'मडोना और बच्चा' इन्होंने इस चित्र को गर्भावस्था के दौरान अंकित किया है। जिसमें माँ अपने बच्चे को स्तनपान करा रही है व माँ के चेहरे पर एक सौम्य–सुख की झलक है। इनकी नारी आकृ ति की बनावट यूरोपीय व रसियन कला से प्रभावित है। **.'शक्ति' (चित्र सं0–03)**–इस चित्र में एक साधारण महिला को देवी रूप में दिखाया गया है। स्त्री के बाल सर्प जैसे हैं उसके अन्दर देवी का रूप दिख रहा है। हाथों में पुरुष का कटा हुआ सिर है पूरे वातावरण में एक आक्रोश का भाव है जिसमें पीले व लाल रंगों की अधिकता है। अंजली का यह चित्र दर्शक को अन्दर से झकझोर देता है। क्ति 'ग्रेंडमा एथेल कम्स टू कलकत्ता' में इन्होंने नारी शक्ति के प्रबल रूप को सम्बोधित किया हैं, चित्र 'कल्पना' में वे नारी को आत्मनिर्भर होने का संदेश दे रही हैं। 'फलों के साथ महिला', 'दरीबा', 'ईव', 'ड्रीम', 'गर्ल विद पैरेस', 'नन्दिता' आदि प्रमुख कृतियाँ। अंजली के चित्रों में हम भावों का प्रबल प्रभाव देख सकते हैं।

गोगी सरोज पाल भारत की समकालीन नारीवादी कलाकार मानी जाती हैं। गोगी ने अपने बचपन से ही अन्धविश्वास और रूढिवादी परम्परा का खुलकर विरोध किया है। उन्होंने अपनी दादी से खुलकर विरोध करना सीखा। उनके अनुसार नारी का स्तर पुरूषों से कम नहीं है। वे नारी के धैर्य, साहस तथा सहनशीलता जैसे गुणों के कारण उन्हें पुरूषों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ मानती हैं। गोगी के अनुसार नारी समाज में पूर्ण गरिमा के साथ जीने की ताकत रखती है। **'कामधेनु' (चित्र सं0–04)**–इस चित्र में गोगी ने पौराणिक कथा को आधार बनाकर नारी को दैवीय शक्तियों से युक्त गाय के रूप में चित्रित किया है। आधा शरीर नारी का तथा आधा शरीर गाय की तरह बनाया है कामधेनु एक गाय थी जिसका जिक्र भारतीय हिन्दू ग्रन्थ में मिलता है जो सबकी इच्छा पूर्ति करती है गोगी ने नारी की तुलना कामधेनु गाय से की है जो पुरूषों की सारी इच्छाओं की पूर्ति करती है। गोगी के चित्रों में भारतीय स्त्री की यथार्थ स्थिति की सच्चाई है। इन्होंने अपने चित्रों में नारी के विभिन्न मुद्राओं में पशुओं की सवारी करते दिखाया है। ''गोगी की कृतियों में महिला जीवन को कई माध्यमों में पिरोती हुई प्रतीत होती हैं आधा स्त्री तथा आधा पशु या पक्षी का आकार लेकर स्त्री अपने अस्तित्व और समाज में स्थिति को दिखाती है''[3]। गोगी ने नारी को सदैव ही अपने चित्रों में महत्वपूर्ण तथा सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया है। नारी, आज्ञाकारी पत्नी, माँ बहन, बेटी जो दायित्वों को झेलते हुये अपने परिवार तथा घर के प्रति समर्पित रहती है। इनकी कृति 'स्त्री होना' इसकी प्रेरणा उनको बनारस की विधवा महिलाओं को देखकर मिली। इन विधवा महिलाओं को समाज के भौतिक सुखों से वंचित देखकर गोगी ने समाज की कुप्रथा को अपने चित्रों द्वारा प्रस्तुत किया है। इनकी प्रमुख कृतियाँ– किन्नरी, 'हठयोगिनी', 'नायिका इत्यादि है। उन्होंने भारतीय स्त्री के प्रति भेद–भाव अपने खास

अंदाज में दिखाया महिला होने के लाभ बताए तथा एक महिला होने के नाते उन्होंने साबित भी किया है कि महिला कमजोर नहीं है बस उन्हें अपनी इच्छा शक्ति पहचानने की जरूरत है।

अर्पणा कौर अंतर्राष्ट्रीय समकालीन महिला चित्रकारों में से एक हैं। पंजाब में जन्मी इस कलाकार पर वहाँ के सिख गुरूओं तथा आध्यात्मिकता का प्रभाव दिखता है। उनकी कलाकृतियों में नारी जीवन पर आधारित चित्र अधिक दिखाई देते हैं। इनके चित्रों का विषय हमेशा समाज तथा सामाजिक–परिस्थितियों पर आधारित रहते हैं जिसमें वे चलती–फिरती विषय वस्तुओं पर ध्यान देती हैं। इन्होंने अपने कृतियों में सामाजिक तथा राजनीति स्तर पर नारी मुद्दों पर एक संदेश दिया है। अपनी साधारण आकृतियों में वे भाव अभिव्यक्ति का अद्भुत क्षमता रखती हैं। अपर्णा ने अपनी कुछ कृतियों में नारी हिंसा को अपना विषय चुना, जैसे– चित्र 'पर्दे के अन्दर', 'औरत', 'संरक्षक के कानून', वृन्दावन की विधवाएँ' आदि। **.'वृन्दावन की विधवाएँ' (चित्र–सं0–05)**–यह चित्र नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट, नई दिल्ली में सुरक्षित है। पूरे चित्र में सात विधवायें हैं जो भिन्न–भिन्न भाव–भंगिमाओं में गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर बैठी हुई चित्रित हैं। ऊपर नीले रंग से एक नदी दर्शायी गयी है। नदी में बाँसुरी बजाते हुए कृष्ण अंकित हैं। इस चित्र में बैठी हुई विधवाओं के मुख पर दुःख और निराशा के भाव स्पष्टतः दिखायी देते हैं। उनकी पीड़ा को महसूस किया जा सकता है। वह कहती हैं "मुझे बहुत पीड़ा होती है, जब मैं समाज में इस तरह के लोगों को देखती हूँ"[4]। उन्होंने भारतीय पौराणिक विषय पर भी चित्रण कार्य किया है जिसमें नारी के महत्व को दर्शाया है। इनमें 'महिषासुर वध', 'पूतना वध', एवं सोनी–महिपाल पर आधारित चित्र प्रमुख हैं। चित्र 'नौकरानी', 'रक्षक ही भक्षक', 'अम्ब्रेला', 'विडोज', 'योगिनी' आदि चित्रों में भी उन्होंने नारी के भावों को प्रमुखता दिया है।

बी.प्रभा भारतीय आधुनिक महिला चित्रकारों में लोक–कला को आधुनिक दृष्टि देने वाली चित्रकार हैं। इनके चित्रों में भारतीय नारी को सरल भाव में दर्शाया गया है। इनके चित्रों में हमें ज्यादातर जनजाति महिलाओं की दिनचर्या देखने को मिलती है। जैसे–चक्की पिसती, घर जाती, बैठ कर बात करती हुयी, पनघट जाते, आल्ता लगाते हुए, माँ बच्चे, मटका बेचती, तोते से बात करते हुये, इनके नारी आकृतियों के चेहरे पर संतुष्टि भरी प्रसन्नता के भाव है जिसे देखकर दर्शक को सुख का अनुभव होता है। चित्र 'ऐटवर्क' इस चित्र में दो आदिवासी स्त्री के आकृति, उनका पहनावा के साथ वातावरण को प्रभावी ढंग से संयोजित किया है। इनके चित्र संयोजन को देखकर ऐसा लगता है स्त्री घरेलू स्थति से उबर नहीं पायी है तथा उसने अपने जीवन को साधारण स्तर तक ही सीमित रखा हैं। यह तस्वीर भारत की असंख्य महिलायों के जीवन को प्रस्तुत करती है, जिनमें लोक–कला का आभास और आधुनिकता का झलक मिलती है। बी. प्रभा के चित्रों को देखकर ऐसा लगता है कि नारी समाज की पंरम्पराओं में भी रहकर सादगी भरी सुखमय जीवन को आनंदमय के साथ व्यतीत कर रही हैं।

माधवी पारेख भारतीय महिला चित्रकारों में एक चर्चित नाम हैं। इनकी कला शैली में लोककला और भारतीय तत्वों का समावेश है व चित्रों के विषय समकालीन हैं। इनके चित्रों में आकृतियाँ भागती, दौड़ती व हमारे इर्द–गिर्द धूमती एक नवीन कहानी प्रस्तुत करती हैं। इस सम्बन्ध में भी उनका मस्तिष्क ग्रामीण भारत के लय के साथ घूमता रहता है। माधवी पारेख की नारी चित्रों में स्त्रियों की सामाजिक दशा और आर्थिक समस्या को चित्रण किया हैं। चित्र '**देवी दुर्गा**' नारी शक्ति को प्रतीक रूप में नारी को राक्षस का विनाश करते हुई दिखाया है। "यह चित्र माधवी की स्त्रीत्व से सम्बद्ध अतिसंवेदनशील वास्तविक पहलू को एक शक्ति और सत्ता के स्रोत के रूप में रूपान्तरित करती है"[5]। **Goddess by Madhavi (चित्र सं0–06)** इस चित्र में एक आकृति को गाय पर आसीन दिखाया गया है। नारी सांसारिक जीवन में व्यस्त रहती है जिसके कारण एक महिला बाहरी जीवन से वंचित रह जाती है। माधावी पारेख ने महिला को माँ दुर्गा का रूप न देकर एक सामान्य महिला के रूप में उसे घर के कामकाज में व्यस्त दर्शाया है। चित्र में उनके हाथों में काम–काजी वस्तु लिये हुये बनाया गया है। चित्र में मधुर रंगों का प्रयोग है, जिसमें हल्का नीला, हल्का पीला व सफेद, लाल रंग के साथ काला रंग मुख्य रूप में हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त जितने भी महिला चित्रकार हैं उनके चित्रों में हमें नारी चित्रण देखने को मिलता है। किन्तु आज भी कुछ युवा समकालीन चित्रकार हैं जिनके कार्यों में हम आज भी नारी चित्रण की झलक देख सकते हैं जैसे वसुंधरा तिवारी, सीमा कोहली, अनीता तंवर, वंदना दुबे, अंजुम खान, शोभा बरुटा, मोना रॉय, अंजू डोडिया, इत्यादि नाम भी उल्लेखनीय हैं जिनके चित्रों में स्त्री के विभिन्न पहलुयों को देखा जा सकता हैं यह चित्रकार अपने चित्रों के माध्यम से नारी के जीवन के जीवन में उत्पन्न समस्याओं व उनके ऊपर हुए अपराधों को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। जिसमें कल्पना भरी रहस्यमयी रचना के साथ काल्पनिक रूप में चित्रित रूप का अवकाश व छाया–प्रकाश में दिखाई देने वाले अनोखे प्रभाव से दर्शक के मन में विचरण की अनुभूति होती हैं।

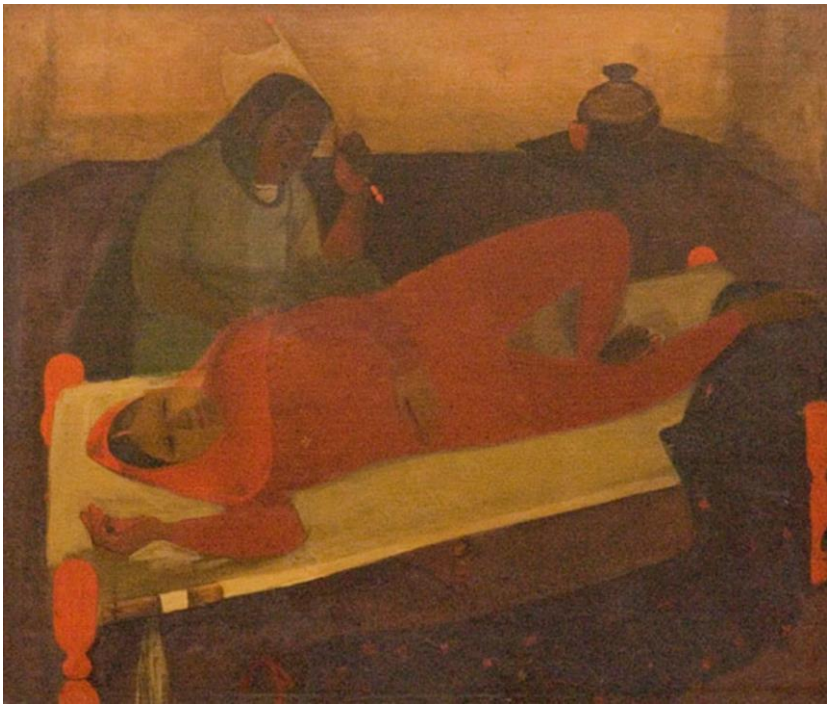

(चित्र–सं0–01) **अमृता शेरगिल, चारपाई पर महिला**, 1937, कैनवास पर तैल रंग 850 x 724 सेमी, NGMA, नई दिल्ली

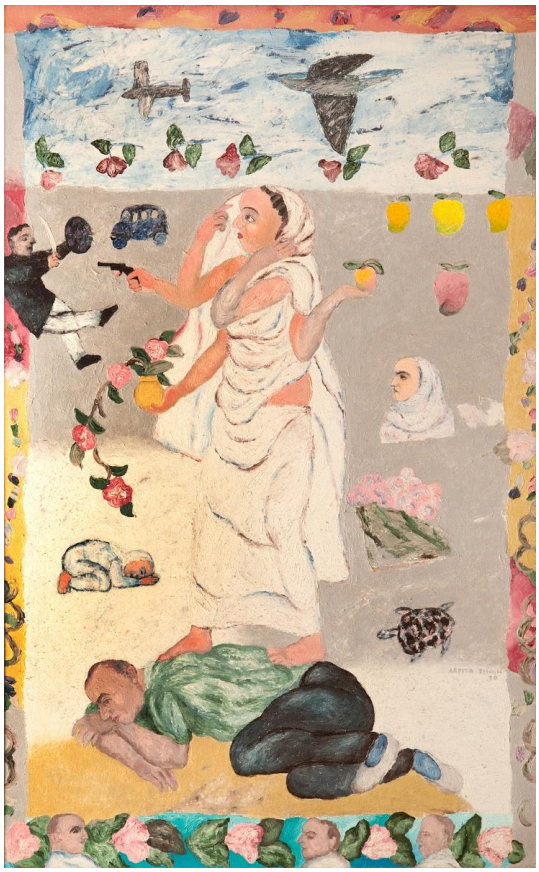

(चित्र–सं0–02) **अर्पिता सिंह, पिस्तौल वाली दुर्गा**, 1990, कैनवास पर तैल रंग 122 x 76.5 सेमी

(चित्र–सं0–03) **अंजलि इला मेनन, शक्ति**, मिश्रित माध्यम, 36″ x 24″ इंच, 1999

(चित्र–सं0–04) **गोगी सरोज पाल, कामधेनु,** (Gouache on Paper, 56 x 76 cm, 1995)

(चित्र–सं0–05) **अर्पणा कौर, वृन्दावन की विधवाएँ,** (Oil on Canvas, 60 x 70 inch, 1988)

(चित्र–सं0–06) **माधवी पारेख Goddess by Madhavi** (Oil on Canvas, 60 x 70 inch)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. **डॉ. अर्चना जोशी, विश्व इतिहास में महिला चित्रकार**, राज पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2008, पृष्ठ संख्या–76
2. **मागो प्राणनाथ, भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य**, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ संख्या–37,38
3. **जोशी ज्योतिष, समकालीन कला**, ललित कला अकादमी, प्रकाशन नई दिल्ली, अंक 40–41, (नवम्बर 2009–फरवरी 2010), मार्च–जून 2010, पृष्ठ संख्या–79
4. **जोशी ज्योतिष, समकालीन कला**, ललित कला अकादमी, प्रकाशन नई दिल्ली, अंक 48, फरवरी 2016, पृष्ठ संख्या–73
5. डॉ **सुनीता शर्मा, भारतीय आधुनिक चित्रकला एवं महिला चित्रकार**, आशा प्रकाशन, आर्य नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण 2007, पृष्ठ स० –216